Self Respect

12-08-2014

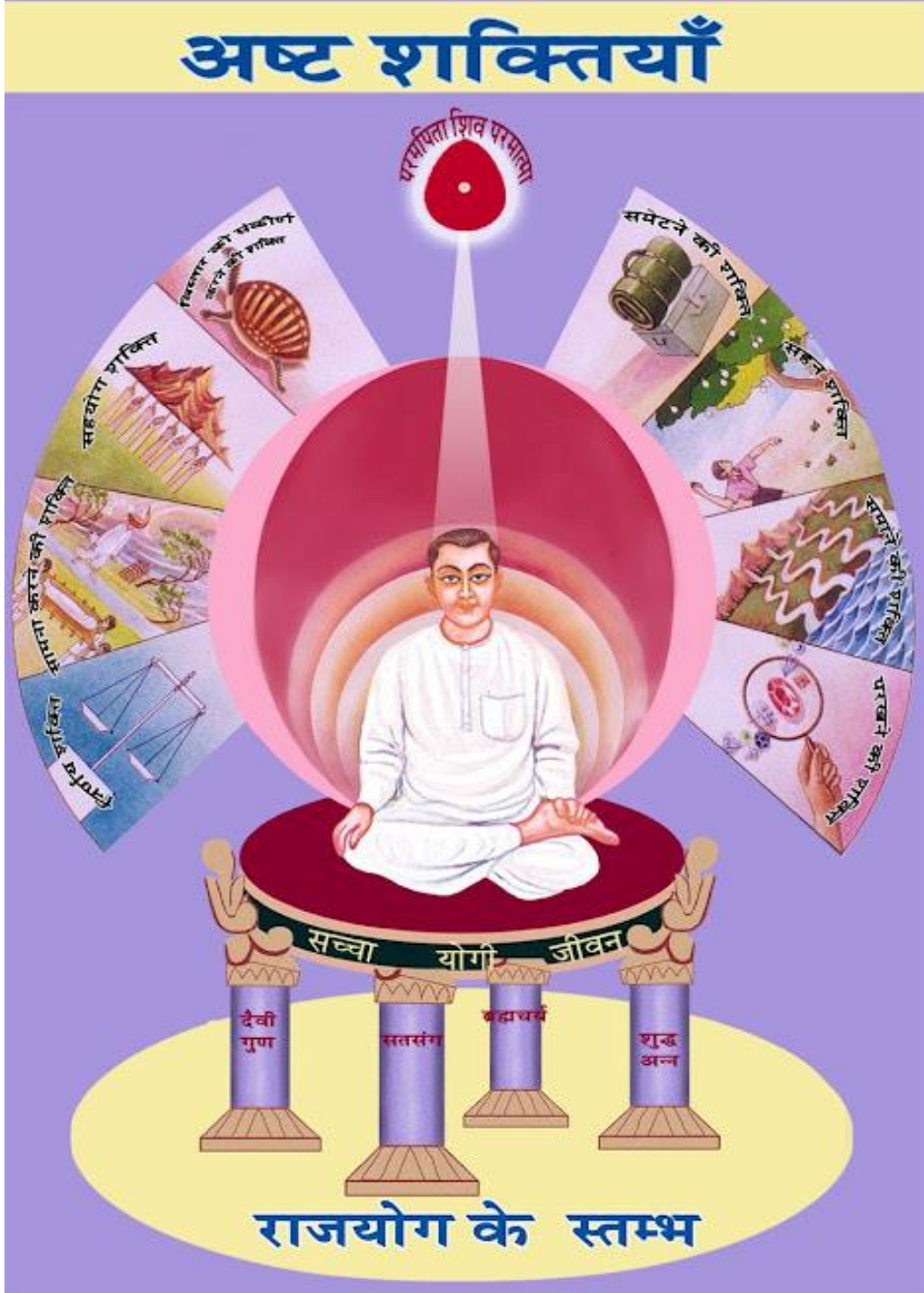

✓बाप कहते हैं योग अक्षर काम में न लाओ । बाप को याद करो, वह है आत्माओं का बाप, परमपिता, पतित-पावन ।

✓यह पाठशाला है, तुम आये हो यह पढ़ने । यह लक्ष्मी-नारायण है तुम्हारी एम-ऑब्जेक्ट । और कोई ऐसे कह न सके । तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है । हम ही विश्व के मालिक थे । पूरे 5 हजार वर्ष हुए । देवी-देवता विश्व के मालिक हैं ना । कितना ऊंच पद है ।

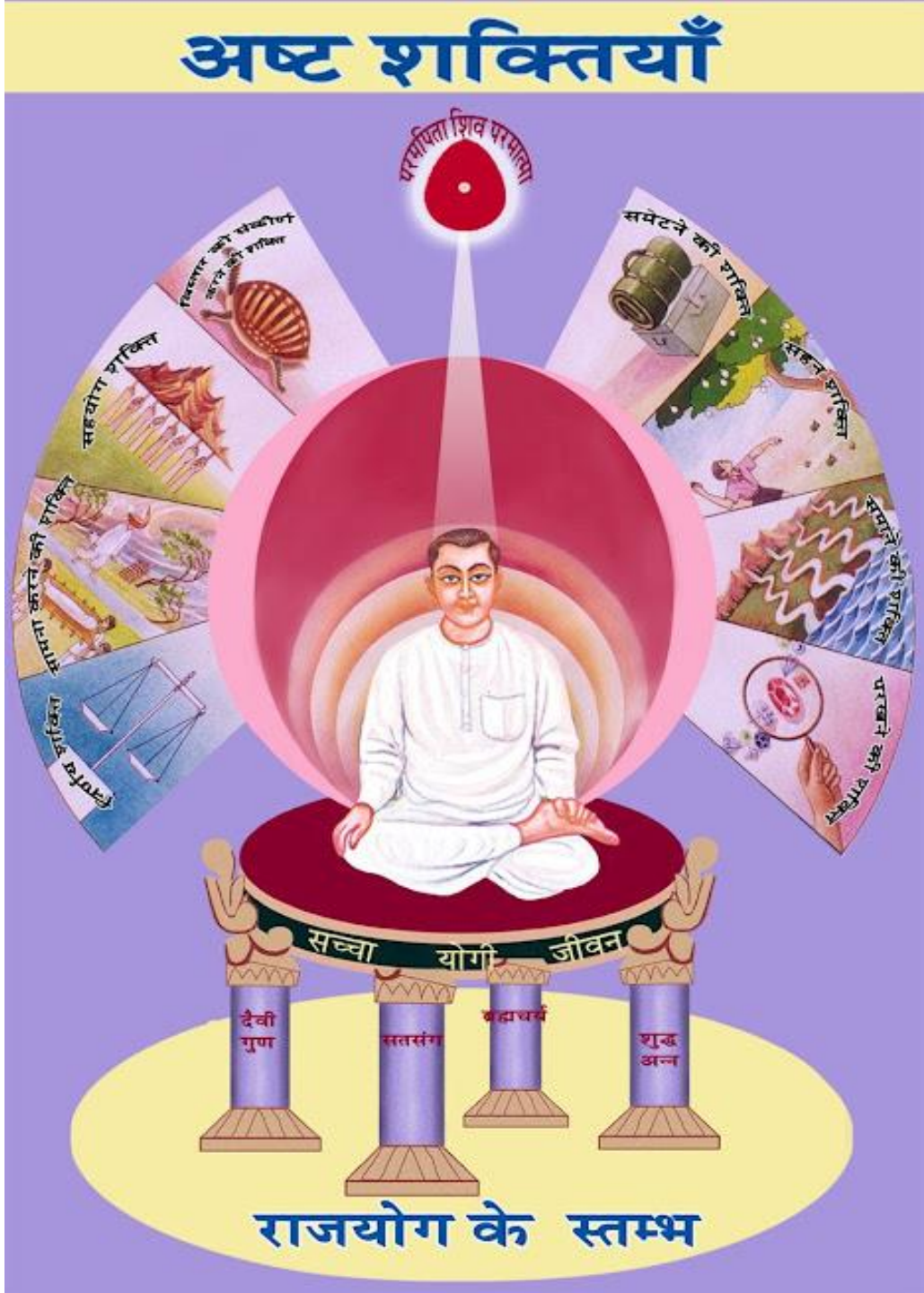

- ✓ बाप अभी तुमको आसुरी से दैवी बनाते हैं, दैवीगुण धारण करने से दैवी संप्रदाय बनेंगे । दैवी संप्रदाय रहते हैं सतयुग में, आसुरी संप्रदाय रहते हैं कलियुग में । अभी है संगमयुग । अब तुमको बाप मिला है, कहते हैं अब तुमकी फिर दैवी संप्रदाय बनना है जरूर । तुम यहाँ आये ही हो दैवी संप्रदाय बनने । दैवी संप्रदाय वालों को अथाह सुख है ।
- ✓ योगबल से पापों को खत्म करते हो । इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो । तुम विश्व के मालिक थे तो सही ना । वह फिर कहाँ गये, यह भी बाप ही बताते हैं । तुमने 84 जन्म लिए, सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बने । कहते भी हैं भक्ति का फल भगवान देते हैं ।

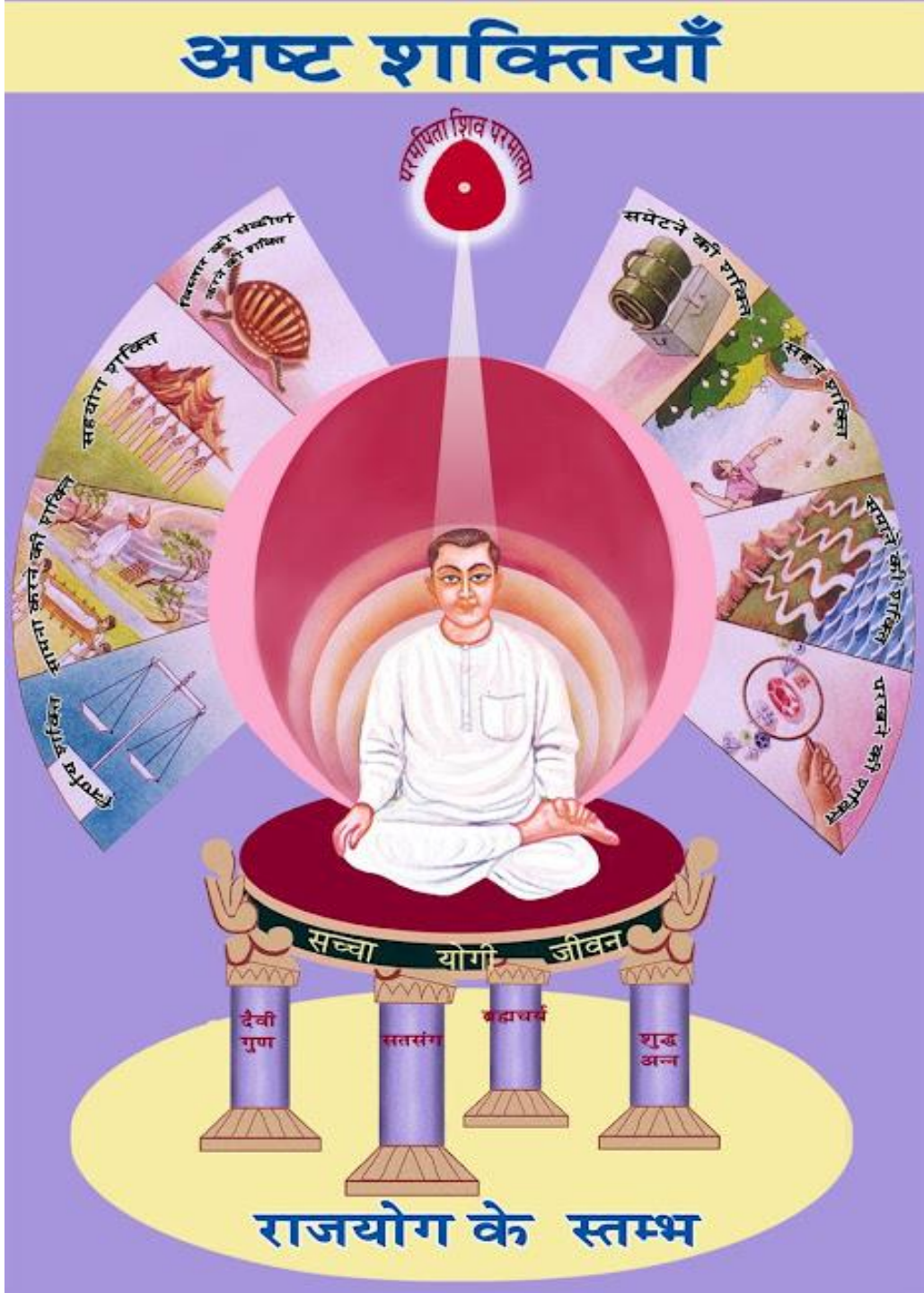

- ✓शिवबाबा अपने बच्चे ब्रह्मा में प्रवेश कर तुमको ज्ञान देते हैं । ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी इनके बच्चे हैं । निराकार बाप के सब बच्चे निराकार है । आत्मायें यहाँ आकर शरीर धारण कर पार्ट बजाती है ।
- ✓कलियुग मे अनेक राजायें हैं । वहाँ तुम थोड़े राज्य करते हो । बाकी सब आत्मायें मुक्ति में चली जाती हैं । तुम जाते हो जीवनमुक्ति में वाया मुक्तिधाम । यह चक्र फिरता रहता हैं । अभी तुम आत्माओं को दर्शन हुआ हैं इस सृष्टि चक्र का, रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का । तुम ही इस ज्ञान से नर से नारायण बनते हो ।

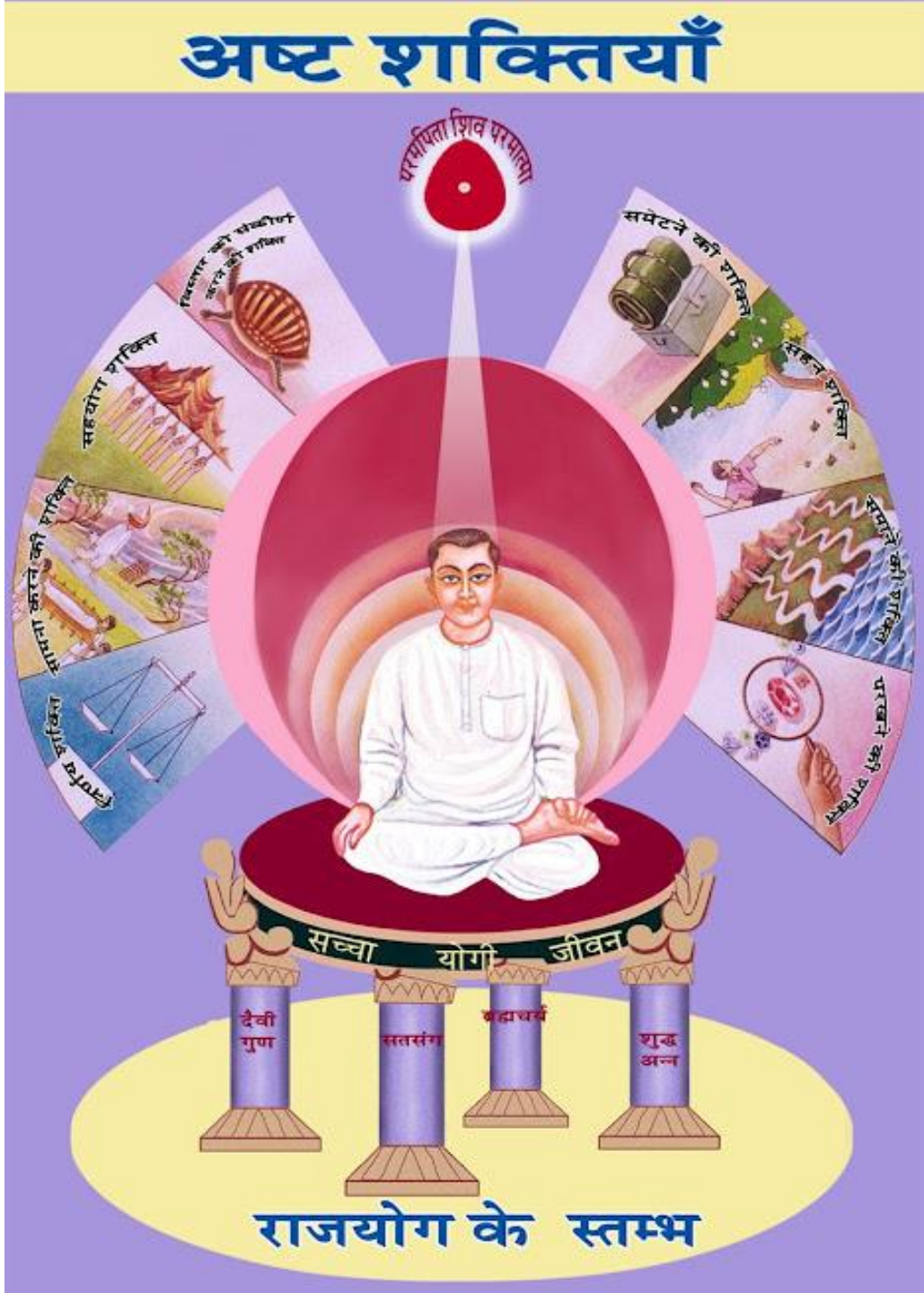

- ✓सन्यासियों की माला होती नहीं । वह हैं निवृति मार्ग वाले । वह प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सके । पवित्र बनने के लिए उनका है हद का सन्यास, वह हैं हठयोगी । यह है राजयोग, राजाई प्राप्त करने के लिए बाप तुमको यह राजयोग सिखलाते हैं ।
- ✓आधाकल्प तुम राजाई करते हो सुख में, फिर रावण राज्य में आहिस्ते-आहिस्ते तुम दु:खी हो जाते हो । इसको कहा जाता हैं सुख-दु:ख का खेल । तुम पाण्डवों को जीत पहनाते हैं । अब तुम हो पण्डे । घर जाने की यात्रा कराते हो । वह यात्रायें तो मनुष्य जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं । अब तुम्हारी यात्रा है घर जाने की ।

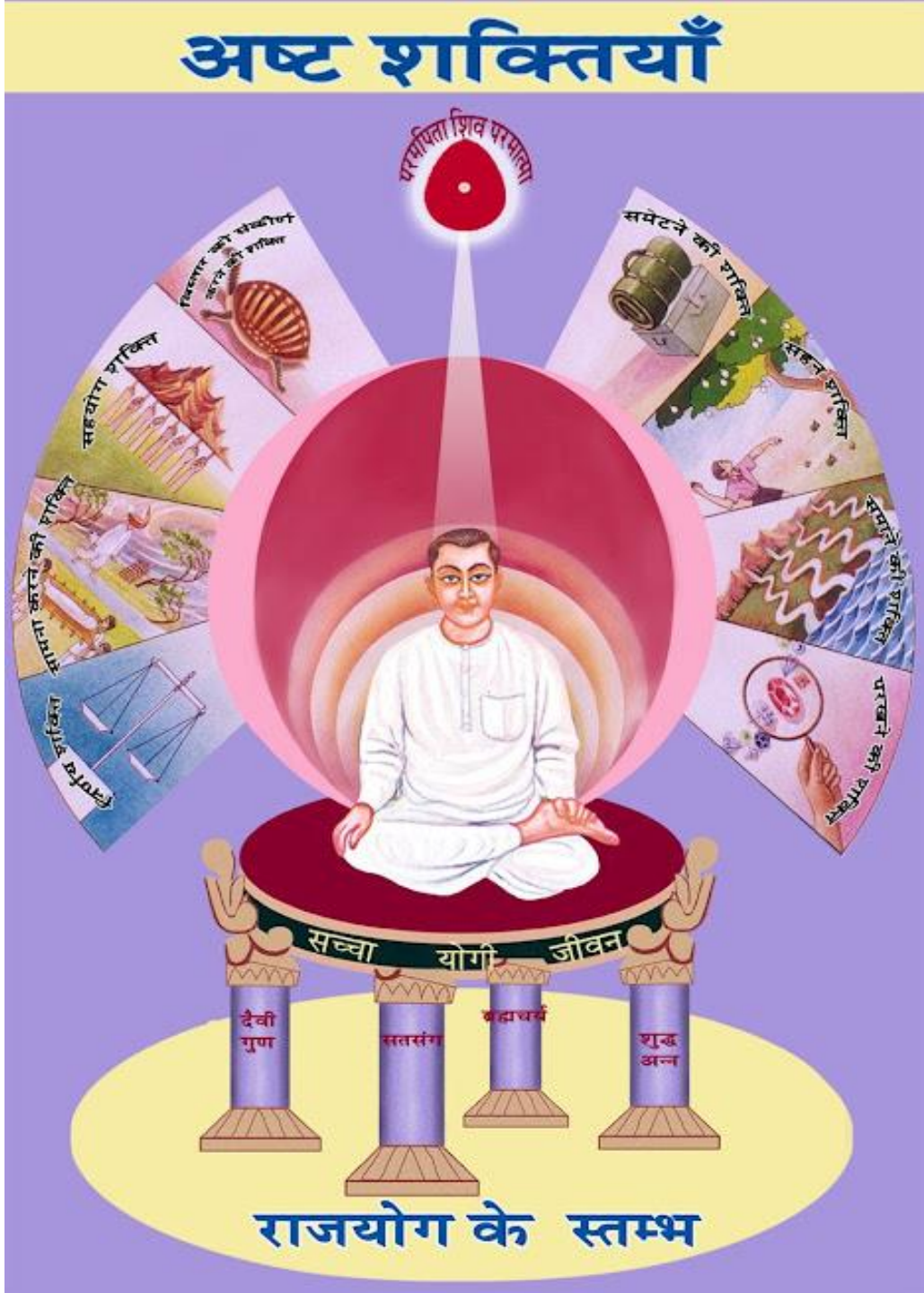

- ✓ ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र-यह चक्र फिरता ही रहता है । ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल होता है, इस छोटे से युग में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं । तुम बच्चे भी हो तो स्टूडेंट भी हो, फालोअर्स भी हो । एक के ही हैं । ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं जो बाप भी हो, शिक्षा देने वाला टीचर भी हो, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता हो, फिर साथ में भी ले जाये । ऐसा कोई मनुष्य हो न सके । यह बातें अभी तुम समझते हो ।
- ✓ मनुष्य भक्ति मार्ग में कितनी पूजा करते रहते हैं लेकिन किसको जानते नहीं । अभी तुम सबको जान गये हो । तुम सब देवता बनते हो तो फिर पूजा की बात ही खत्म हो जाती है । जब रावण राज्य शुरू होता है तब भक्ति शुरू होती है ।

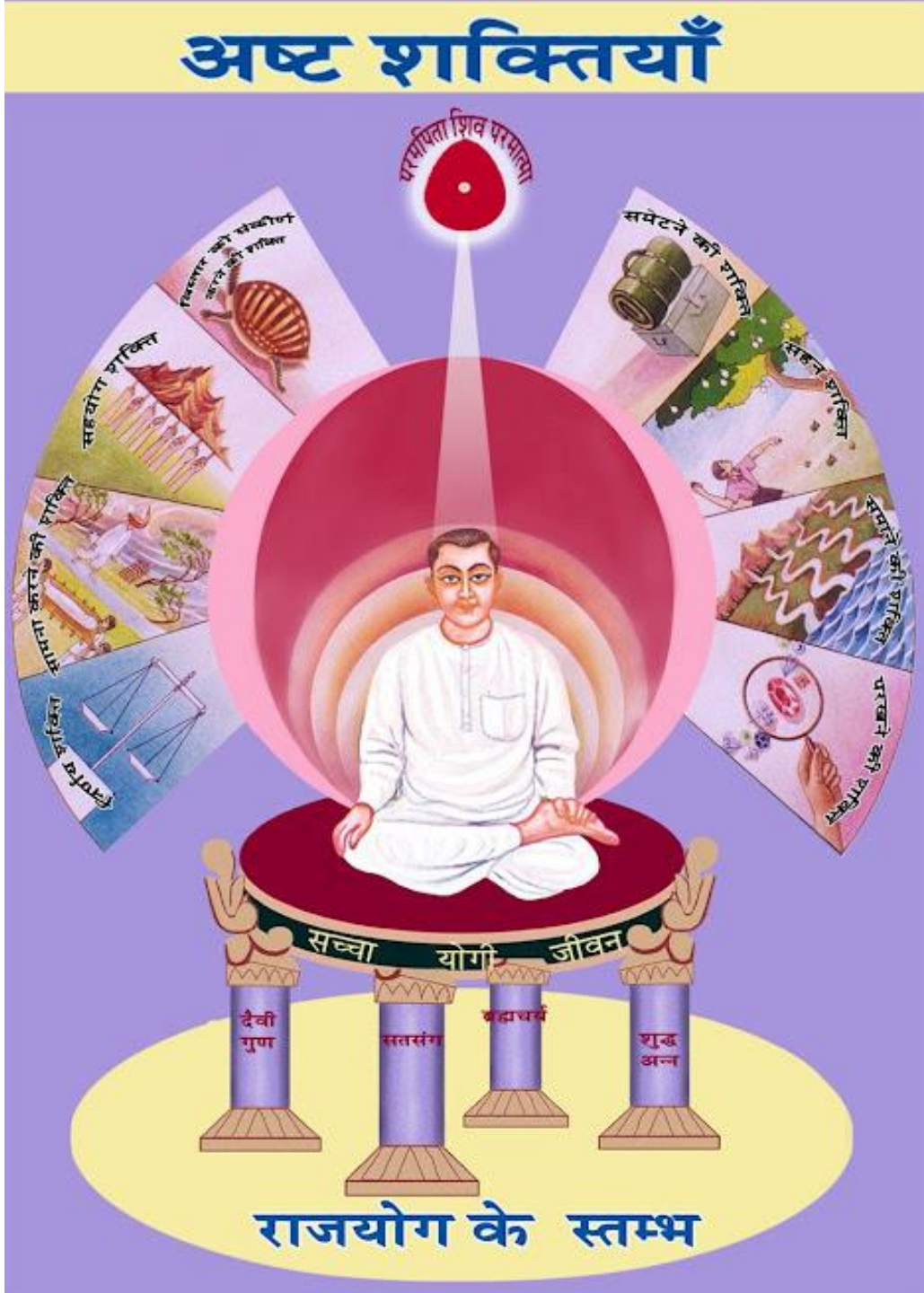

✓वरदान: सुख स्वरूप बन हर आत्मा को सुख देने वाले मास्टर सुखदाता भव !

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |